विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्व :

भारत में अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति के अन्तर्गत इतिहास-शिक्षण का शिक्षालय-विषय के रूप में सूत्रपात किया गया। इस पद्धति में इतिहास को ब्रिटिश स्कूलों का अनुकरण करके भारतीय विद्यालयों में परीक्षा विषय के रूप में सम्मिलित किया गया। उस समय इसका परीक्षा के दृष्टिकोण के अतिरिक्त और कोई महत्व नहीं था और न इसके उद्देश्यों एवं प्रयोजनों की ओर कोई ध्यान दिया गया। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय विद्यालयों में इतिहास अनुपयुक्त विषय माना जाता था। परन्तु आधुनिक परिस्थितियों में इतिहास के अध्ययन को एक मुख्य परीक्षा विषय के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता, क्योंकि आज सामाजिक प्रवृत्ति ने इतिहास के महत्व को बहुत बढ़ा दिया।

विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्व को स्पष्ट करने लिए विभिन्न विचारकों तथा लेखकों ने अपने भिन्न-२ मत तथा विचार दिये हैं जो निम्नलिखित हैं,

(अ) के० पी० चौधरी का मत :

इन्होंने इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण विषय माना है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। यद्यपि इतिहास अधिकांशत: अतीत से सम्बन्धित है, परन्तु यह वर्तमान पर भी बल देता है, इतिहास के अभाव में अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया जाता है।

के० पी० चौधरी के अनुसार ~~इतिहास~~ विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का निम्नलिखित

(1) - अतीत के लिये प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक-

(2) - भारतीय जीवन के ढंग से अवगत कराने के लिए आवश्यक -

(3) - सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु -

(ब) ग्राण्ट रॉबर्टसन का मत :-

इति ग्राण्ट

रॉबर्टसन का मत है कि " इतिहास द्वारा बालकों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है। अर्थात इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है, जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं।" इसके द्वारा बालकों को पथ-प्रदर्शित किया जाता है, इसके द्वारा बालकों की जिज्ञासा को सन्तुष्ट किया जाता है, इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों, व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं, तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इससे वे अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर सकते हैं।

(स) के० डी० घोष का मत :-

के० डी घोष का मत है कि " इतिहास द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है। जो कि विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है।"

इसमें सन्देह नहीं कि इतिहास में बालकों को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है। बालक को जो कुछ इतिहास में पढ़ता है, उसको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थायों

कल्पना-शक्ति को विकसित होने के बहुत अवसर प्राप्त होते हैं, बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुरूप तथ्यों को संकलित, ~~परीक्षित~~ परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है।

~~इतिहास बालक के मानसिक क्षितिज~~

इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है, इस प्रकार इससे उसमें, सत्य, देश-प्रेम के साथ-साथ विश्व-बन्धुत्व की भावना विकसित होती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य ~~नहीं~~ नहीं है कि वह मात्र राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों आदि के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे। वह अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है।

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

20-8-2020